ISBN: 978-81-974088-0-9

6. वर्तमान समय में मन्द बुद्धि बालकों की प्रमुख समस्याएँ

छाया साव

सहायक प्राध्यापक,
श्री. रावतपुरा सरकार धनेली रायपुर.

मानसिक मन्दता एक ऐसा मस्तिष्क विकार है जिसमें मनुष्य के मस्तिष्क का विकास किसी स्तर पर रूक जाता है और यह रूकावट स्थाई रूप ले लेता है। इसी स्थाई रूकावट के कारण शरीर, बुद्धि व मन में मन्दता उत्पन्न हो जाती है और व्यक्ति अपने सारे जीवन काल में प्रत्येक रूप में दुर्बल, असहाय व अपूर्ण होता चला जाता है। ऐसे मानसिक मन्दता के शिकार व्यक्ति में सोचने समझने, निर्णय लेने, ध्यान देने, याद करने व याद रखने, अपनी समझ से कार्य करने तथा समायोजन करने की दुर्बलता पाई जाती है।

बीज षब्द – मन्द बुद्धि बालक, समस्या, मानसिक दुर्बलता, क्षमता आदि।

प्रस्तावना –

भारत एक कल्याणकारी जनतान्त्रिक राष्ट्र है अतः दिव्यांग बालकों को विकास तथा शिक्षा में सरकार तथा समाज का लगातार सहयोग मिल रहा है, परन्तु आज भी इनकी शिक्षा तथा विकास सम्बन्धी समस्याओं और आवश्यकताओं की समझ जनमानस को बहुत कम है। जिसकी पूर्ति हेतु राष्ट्रभाषा में इस विषय पर पुस्तकों का अभाव है। अतः यह प्रयास आपके समझ प्रस्तुत है।

यह सर्वमान्य रूप से सत्य है कि प्रत्येक अभिभावक विशेषकर बालक के माता–पिता अपने बालक के व्यक्तित्व के विकास में अपनी क्षमता से अधिक योगदान करने का हमेशा से प्रयास करते है, जिसका स्वरूप वे अपनी कल्पना के अनुसार तैयार करते है, लेकिन कभी–कभी उन्हें निराश होना पड़ता है क्योंकि यह सर्वविदित है कि दो प्राणी एक समान नही होते हैं। इस सत्य का ज्ञान अभिभावकों और शिक्षकों दोनों के लिए आवश्यक है। सृष्टि के अभ्युदय से आज तक यह विशिष्टता है कि कोई भी दो प्राणी एक जैसे नही होते। बाल विकास के अनुसार बालक के दो प्रकार को माना गया – सामान्य बालक और विशिष्ट बालक।

इस विशिष्टता के क्रम में प्रखर बुद्धि वाले बालकों से लेकर मानसिक रूप से मंद बुद्धि बालकों तक को रखा गया है। जिसमें मानसिक समस्याएं मानव जाति के उदय के साथ ही किसी न किसी रूप में हमेशा से पाई जाती रही है। मनोव्याधि का इतिहास अत्यधिक प्राचीन है। आदिम काल मे यह माना जाता था कि सभी प्रकार की समस्याओं विशेषकर मानसिक समस्याओं का एक मात्र कारण अदृश्य आत्मा और अलौकिक शक्ति है।

व्यक्ति में जब सामान्य आत्मा कार्यरत रहती है तो व्यक्ति सामान्य व्यवहार व कार्य करता है और जब अलौकिक शक्तियों के कारण उसमे दुष्ट आत्मा प्रवेश कर जाती है तो वह कई प्रकार के विचित्र व्यवहारों को जादू–युक्त जीववाद की संज्ञा दी जाती है। मंद बुद्धि भी इसी प्रकार की एक व्याधि है जिसमें प्रभावित व्यक्ति के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखा जाता था और उसके साथ सहानुभूति पूर्वक व्यवहार किया जाता था।

मानसिक मन्दता क्या है?

मानसिक मन्दता मानसिक विकलांगता, बुद्धि की कमी मानसिक दुर्बलता व मन्दबुद्धि एक ही स्थिति के अलग–अलग नाम है। यह एक ऐसी गम्भीर मानसिक समरूा है, जो गर्भकाल या जन्म के समय से ही आरम्भ होती है।

यह कोई बीमारी नहीं अपितु एक व्याधि है जो निम्न मानसिक विकास की वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति मानसिक रूप से पूरी तरह विकसित नही हो पाता वह किसी भी बात अथवा कार्य को धीमी गति से समझता है इसमें बुद्धि का स्तर औसत से कम होता है तथा इस प्रकार के समस्या से ग्रस्त व्यक्ति में सामाजिक अपर्याप्तता भी पाई जाती है।

परिभाषा –

अमेरिकन ऐसोसिएशन आन मेण्टल डेफिशेन्सी (1973) ने मानसिक मन्दन की निम्नलिखित परिभाषा प्रकाशित की है, **''मानसिक मन्दता का अर्थ औसत से निम्न सामान्य उन बौद्धिक प्रकार्यों से है जो सार्थक रूप से अनुकुलनात्मक व्यवहार की कमियों के साथ विद्यमान होते हैं तथा जिसकी अभिव्यक्ति विकासात्मक अवस्था में होती है।''**

जेम्स डी. पेज के अनुसार (1962) **''मानसिक मन्दता निम्न मानसिक विकास की वह अवस्था है जो व्यक्ति के जन्म से विद्यमान होती है या बाल्यावस्था के प्रारम्भिक काल में ही उत्पन्न हो जाती है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं, सीमित बौद्धिक स्तर और सामाजिक अपर्याप्तता।''**

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा प्रकाशित ICD – 10 ने मानसिक मन्दता को इस प्रकार परिभाषित किया है, **''मानसिक मन्दन बुद्धि के अवरूद्ध तथा अपूर्ण विकास की वह स्थिति है जो विशेषकर विकास के काल में उत्पन्न हुई विकृति होती है जो समग्र बौद्धिक स्तर – ज्ञानात्मक भाषा प्रेरक, चालक तथा सामाजिक योग्यताओं को प्रभावित करती है।**

मन्दबुद्धि बालकों की समस्याएँ –

(1) सामाजिक समस्याएँ :–मंद बुद्धि बालकों को सामाजिक रूप से बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो उनके मन, मस्तिष्क मे एक गहरा छाप छोड़ने के साथ ही उनके व्यवहार को भी बनाने या बिगाड़ने का कार्य करती है। इस प्रकार के बालक सामाजिक क्रियाकलापों में भाग नही ले सकते। किसी भी प्रकार सामाजिक समूह में स्वयं को समायोजित कर पाने में असमर्थ होते है। क्योंकि इनके लिए समूह के मानदण्डों, अपेक्षाओं इत्यादि को समझ पाना सम्भव नहीं है। जिसकी जानकारी न होने के कारण कई बार इनका आचरण अनैतिक प्रतीत होता है।

(2) संवेगात्मक समस्याएँ :–समस्यात्मक बालको में संवेग की समझ अस्थित होने के कारण ये गलत जगह एवं गलत समझ पर अपने संवेगो को प्रकट कर देते है। प्रायः ईर्ष्या, द्वेष, जलन इत्यादि संवेगों के कारण ये दूसरे बालकों से आसानी से घुल–मिल नहीं पाते। इनमें सामंजस्य करने की क्षमता कम होती है, जिससे वे स्वयं को अक्षम जानकर प्रायः निराशा और कुण्ठा पाल लेते हैं।

(3)मानसिक एवं शैक्षिक समस्याएँ –मंद बुद्धि बालक होने के कारण इनकी बुद्धि–लब्धि अपनी आयु के अन्य बालकों की अपेक्षा बहुत कम होती है। जिसके कारण वे सामान्य गतिविधियों में भाग नहीं ले पाते, क्योंकि अन्य बालक इन्हें अपने साथ सहयोगी बनाना नहीं चाहते। इसी आधार पर सामान्य पाठ्यक्रम से लाभान्वित नहीं हो पाते, इनके लिए विशेष पाठ्यक्रम एवं शिक्षण की आवश्यकता होती है। जो शिक्षा भी वे लम्बे समय तक नहीं ले पातें।

(4) शारीरिक समस्याएँ –मन्द बुद्धि बालक प्रायः शारीरिक रूप से भी निर्बल एवं असमर्थ होते है। जिससे स्वयं कपड़े पहन पाने, स्वयं भोजन कर पाने तथा एक स्थान से दूसरे स्थान जाने में असमर्थ होते हैं। उन्हें हर समय एक सहयोगी की आवश्यकता होती है। वाहन चलाना, मशीनों का उपयोग तथा अन्य आवश्यक घरेलू उपकरणों का उपयोग नहीं कर सकते।

(5) व्यावसायिक समस्याएँ :–मन्दबुद्धि बालक सामान्य व्यवसायों के उपयुक्त नहीं होते। कुछ गिने–चुने व्यवसाय ही इनके लिए उपलब्ध हैं। जैसे कुर्सी बुनना अथवा अन्य इसी प्रकार के शारीरिक कुशलता पर आधारित व्यवसाय जो सरलता से किया जा सकें। ये अपने व्यवसाय में किसी प्रकार की नवीनता एवं समय के साथ परिवर्तन ला पाने में असमर्थ होते हैं।

(6) सम्प्रेषण की समस्या :–यह एक प्रमुख समस्या है कि मन्द बुद्धि बालक स्वयं को अभिव्यक्त नहीं कर पाते। वे बोलने में एवं लिखने में असमर्थ होने के कारण दूसरो से संवाद स्थापित करने में परेशानी होती है। अपनी समस्याएँ दूसरो से बाँट नहीं पाते कई बार वे स्वयं भी अपनी समस्या नहीं समझ पाते।

निष्कर्षत–

यह कहा जा सकता है कि मानसिक मन्दता मानसिक विकास की वह असाधारण अवस्था है जो व्यक्ति में या तो जन्म के समय ही विद्यमान होती है या प्रारम्भिक अवस्था में उत्पन्न हो जाती है जिसके कारण वह सदैव दूसरों पर निर्भर रहता है और उसे पथप्रदर्शन, निर्देशन, निरीक्षण तथा संरक्षण की आवश्यकता रहती है।

संदर्भग्रंथ–

1. षर्मा,मधुलिका मानसिक मन्द बालक, कनिष्क पब्लिषर्स ,डिस्ट्रीब्यूटर्स दरियागंज, 2016
2. सिंह , डॉ. चन्द्र पाल, मानसिक मन्दता, कनिष्क पब्लिषर्स , डिस्ट्रीब्यूटर्स दरियागंज, 2017
3. महानिया,अराधना,दिव्यांगता का परिचय, कनिष्क पब्लिषिंग हाउस, दरियागंज, 2023